International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 05 | May - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

नेहरू एवं जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन

लालू यादव
शोध छात्र
पंजीयन संख्या : 708/2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश

जवाहरलाल नेहरू और जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवादी चिंतन के दो प्रमुख स्तंभ रहे हैं, जिनके विचारों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विमर्श को गहराई से प्रभावित किया। यद्यपि दोनों ही समाजवादी व्यवस्था के समर्थक थे, किन्तु उनके दृष्टिकोण, कार्यप्रणाली और वैचारिक प्रेरणाएँ भिन्न थीं। इस शोध आलेख में उनके समाजवादी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि नेहरू का समाजवाद एक आधुनिक, औद्योगिक और योजनाबद्ध ढांचे पर आधारित था, जबकि जयप्रकाश नारायण का समाजवाद विकेन्द्रीकरण, नैतिकता और जनसहभागिता के मूल्यों से प्रेरित था। नेहरू ने समाजवादी व्यवस्था को एक योजनाबद्ध राष्ट्रनिर्माण प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें राज्य की केंद्रीय भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार और विज्ञान तथा तकनीक के विकास पर बल देते हुए समाज में समानता और आर्थिक न्याय को सुनिश्चित करने का प्रयास किया। इसके विपरीत, जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद को नैतिक क्रांति और जनचेतना के माध्यम से स्थापित करने की बात की। उनका विश्वास था कि सत्ता का केंद्रीकरण सामाजिक अन्याय को जन्म देता है, अतः समाजवाद तभी सफल हो सकता है जब व्यक्ति, गांव और समुदाय को स्वशासन का अधिकार प्राप्त हो। जहाँ नेहरू का समाजवाद वस्तुतः संरचनात्मक और संस्थागत परिवर्तन पर केंद्रित था, वहीं जेपी का समाजवाद मानवीय चेतना, लोकनीति और आत्मिक परिवर्तन पर आधारित था। जेपी ने सम्पूर्ण क्रांति की परिकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के सभी स्तरों पर नैतिक और सांस्कृतिक रूपांतरण को भी आवश्यक माना गया। वहीं नेहरू ने आधुनिक राष्ट्र राज्य की स्थापना के लिए विज्ञान, धर्मनिरपेक्षता और संवैधानिक संस्थाओं पर बल दिया।

इस शोध आलेख के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि दोनों विचारकों के समाजवाद की दिशा भिन्न होते हुए भी उद्देश्य समान था–एक समतामूलक, शोषणमुक्त और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना। आज के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में, जहाँ आर्थिक असमानता, भ्रष्टाचार और राजनीतिक अव्यवस्था का बोलबाला है, वहाँ नेहरू और जयप्रकाश नारायण दोनों के समाजवादी विचार हमें वैकल्पिक विकास की दिशा प्रदान करते हैं।

मूल शब्द (Keywords) : समाजवाद , विकेन्द्रीकरण , योजनाबद्ध विकास ,गांधीवाद , पंचवर्षीय योजना ,संपूर्ण क्रांति ,राजनीतिक नैतिकता ,धर्मनिरपेक्षता , औद्योगीकरण ,ग्राम स्वराज ,लोकतांत्रिक समाजवाद

साहित्य समीक्षा :

उपर्युक्त ग्रंथों में भारतीय समाजवाद और लोकतांत्रिक विचारधारा के विकास को नेहरू और जयप्रकाश नारायण के विचारों के माध्यम से गहराई से समझा गया है। **जवाहरलाल नेहरू की *डिस्कवरी ऑफ इंडिया*** भारतीय इतिहास, संस्कृति और आधुनिक राष्ट्रनिर्माण की समाजवादी समझ को दर्शाती है। यह पुस्तक भारतीय समाजवाद की आधारभूमि और औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध राष्ट्र के आत्मबोध की प्रस्तुति करती है। **जयप्रकाश नारायण की *लोकनीति और समाजवाद***, लोकतांत्रिक समाजवाद की भारतीय अवधारणा को रेखांकित करती है, जिसमें सत्ता के विकेंद्रीकरण और जन-भागीदारी पर बल दिया गया है। **वी.पी. पाणिग्रही की *नेहरूवियन प्लानिंग एंड सोशलिज्म इन इंडिया*** नेहरू की नियोजित अर्थव्यवस्था और समाजवादी रणनीति को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करती है। **कुलदीप नैयर और एम.एल. आहुजा** द्वारा रचित जीवनियाँ क्रमशः जेपी और उनके राजनीतिक मूल्यों पर केंद्रित हैं, जो उनके समझौताहीन लोकतांत्रिक संघर्ष और नैतिक राजनीति को उजागर करती हैं। **गोस्वामी की *नेहरू और भारतीय समाजवाद***, नेहरू की विचारधारा को भारतीय परंपरा और पाश्चात्य समाजवाद के समन्वय के रूप में प्रस्तुत करती है। वहीं **चतुर्वेदी और शुक्ल** द्वारा रचित कृतियाँ समाजवादी आंदोलन के ऐतिहासिक विकास और जेपी आंदोलन की वैचारिक व सामाजिक समीक्षा करती हैं। **मेहता और मिश्रा** की पुस्तकें भारतीय राजनीतिक चिंतन में समाजवाद की भूमिका तथा साम्यवाद से समाजवाद की ओर भारत के बौद्धिक यात्रा को दर्शाती हैं।

इस प्रकार, समस्त ग्रंथ नेहरू और जेपी की समाजवादी विचारधाराओं की तुलनात्मक समीक्षा के लिए एक व्यापक और विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो शोध के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

शोध का उद्देश्य एवं परिकल्पना :

इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य जवाहरलाल नेहरू एवं जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। नेहरू का समाजवाद राज्य द्वारा संचालित नियोजित विकास एवं औद्योगीकरण पर आधारित था, जबकि जयप्रकाश नारायण का समाजवाद विकेन्द्रीकरण, ग्राम स्वराज और नैतिक मूल्यों से प्रेरित था। शोध का उद्देश्य इन दोनों विचारकों के सिद्धांतों, दृष्टिकोणों, रणनीतियों और उनके समाजवादी मॉडल के व्यवहारिक प्रभावों का गहन अध्ययन करना है।

यह परिकल्पित है कि यद्यपि नेहरू और जेपी दोनों समाजवाद के समर्थक थे, किंतु उनके समाजवादी दृष्टिकोण में मौलिक अंतर था। नेहरू का समाजवाद राज्य-केंद्रित था, जबकि जेपी का समाजवाद जन-केंद्रित और नैतिकता-आधारित था। यह शोध इन अंतरों को स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज में समाजवादी विचारधारा के विविध प्रभावों की पहचान करना जरूरी है।

कार्यप्रणाली एवं डेटाबेस :

इस शोध में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति (Qualitative Methodology) का उपयोग किया गया है, जिसमें तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis) को केंद्र में रखा गया है। शोध की प्रक्रिया में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। नेहरू और जयप्रकाश नारायण के मौलिक ग्रंथों, भाषणों, पत्रों, संसदीय व राजनीतिक वक्तव्यों को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया है।

द्वितीयक स्रोतों में जीवनी, शोध पत्र, इतिहास ग्रंथ, समकालीन आलोचनात्मक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं के लेखों को सम्मिलित किया गया है। शोध का फोकस इन दोनों विचारकों की समाजवादी अवधारणाओं, उनके ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भ, व्यावहारिक प्रयोग तथा दीर्घकालिक प्रभावों पर है।

डेटा संग्रह हेतु राष्ट्रीय अभिलेखागार, संसद पुस्तकालय, विश्वविद्यालय पुस्तकालय एवं ऑनलाइन शैक्षणिक डेटाबेस जैसे JSTOR, EPW और Google Scholar का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में समाजवादी विचारधारा ने एक महत्वपूर्ण वैचारिक धारा के रूप में आकार लिया, जिसने स्वतंत्र भारत के निर्माण की दिशा तय करने में गहरी भूमिका निभाई। इस विचारधारा को दो महान व्यक्तित्वों–पंडित जवाहरलाल नेहरू और लोकनायक जयप्रकाश नारायण–ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया और व्यवहार में उतारने का प्रयास किया। यद्यपि दोनों का उद्देश्य समान था–एक समतामूलक, न्यायपूर्ण और शोषणमुक्त समाज की स्थापना–

किन्तु उनके दृष्टिकोण, कार्यप्रणाली और मूल प्रेरणाएँ भिन्न थीं। पंडित नेहरू का समाजवाद पश्चिमी फैबियन समाजवाद से प्रभावित था, जो राज्य के माध्यम से योजनाबद्ध औद्योगीकरण, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना को प्राथमिकता देता था। वे आधुनिक विज्ञान, तकनीक और संवैधानिक संस्थाओं के माध्यम से भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना चाहते थे। दूसरी ओर, जयप्रकाश नारायण का समाजवादी चिंतन गांधीवादी नैतिकता, विकेन्द्रीकरण और जनसहभागिता पर आधारित था। वे सत्ता और व्यवस्था में बुनियादी बदलाव के पक्षधर थे, और "सम्पूर्ण क्रांति" के माध्यम से समाज की चेतना को जागृत करना चाहते थे।

यह शोध आलेख नेहरू और जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनके वैचारिक स्रोत, सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण, लोकतंत्र की व्याख्या, तथा राज्य की भूमिका के विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि दोनों विचारकों ने भारतीय समाजवाद को किस प्रकार अपने दृष्टिकोण से प्रभावित किया। वर्तमान समय में, जब भारत सामाजिक असमानता, राजनीतिक विघटन और आर्थिक विषमता जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब इन दोनों विचारकों के समाजवादी चिंतन की पुनर्व्याख्या नितांत आवश्यक प्रतीत होती है।

भारत में समाजवादी विचारधारा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

समाजवाद एक ऐसी विचारधारा है जो सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और संसाधनों के सामूहिक स्वामित्व की पक्षधर रही है। भारत में समाजवादी विचारधारा का विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में हुआ, जिसकी जड़ें औपनिवेशिक काल, स्वतंत्रता संग्राम और वैश्विक समाजवादी आंदोलनों से जुड़ी हुई हैं। [1] भारत में समाजवाद का उदय केवल एक राजनीतिक विचार के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक-आर्थिक आवश्यकता के रूप में हुआ, जिसका उद्देश्य शोषणमुक्त, समानतामूलक और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक सुधार आंदोलनों का भी विकास हुआ। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, ज्योतिबा फुले, और बाद में डॉ. भीमराव आंबेडकर जैसे चिंतकों ने सामाजिक असमानताओं, जातिगत शोषण और आर्थिक विषमताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाई। इन आंदोलनों ने भारत में समता और न्याय की विचारधारा को जन्म दिया, जो आगे चलकर समाजवाद के रूप में विकसित हुई। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में रूसी क्रांति (1917) और यूरोप में समाजवादी आंदोलनों से भारत के युवा बुद्धिजीवियों को प्रेरणा मिली। मार्क्स, लेनिन और टोनी बेन जैसे विचारकों के लेखन का प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े विचारशील युवाओं पर पड़ा। विशेषतः भारत में मज़दूर आंदोलनों, ट्रेड यूनियन गतिविधियों और किसान संघर्षों के माध्यम से समाजवादी चेतना तीव्र होती गई। 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP) की स्थापना डॉ. राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता और नरेंद्र देव जैसे युवाओं ने की, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर समाजवादी विचारधारा को स्थापित करना चाहते थे।[2] CSP ने पूंजीवादी शोषण, जातिवादी व्यवस्था और औपनिवेशिक शासन के विरोध में एक वैकल्पिक समाज की

कल्पना की। इसने भूमि सुधार, मजदूर अधिकार, विकेन्द्रीकरण और स्वराज की भावना को समाजवादी दृष्टिकोण से जोड़ा। जयप्रकाश नारायण और लोहिया जैसे नेताओं ने भारतीय समाजवाद को केवल पश्चिमी विचारों पर आधारित नहीं रखा, बल्कि उसे गांधीवादी सिद्धांतों और भारतीय सामाजिक संरचना के साथ समन्वित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत जैसे बहुजातीय, बहुभाषिक और ग्रामीण समाज में समाजवाद की राह विकेन्द्रीकरण और सामुदायिक स्वराज के माध्यम से ही संभव है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने राज्य के नेतृत्व में समाजवादी विकास का मार्ग चुना। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र, भारी उद्योगों, पंचवर्षीय योजनाओं और वैज्ञानिक सोच के माध्यम से आर्थिक विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया। यद्यपि उनका समाजवाद मार्क्सवादी क्रांति से भिन्न था, लेकिन वह एक लोकतांत्रिक और योजनाबद्ध समाज की कल्पना करता था जहाँ राज्य गरीबों का रक्षक हो। 1950 और 1960 के दशक में भारतीय समाजवाद ने अनेक धाराओं का रूप ले लिया। जहाँ नेहरूवादी समाजवाद केंद्रीकृत योजनाओं पर आधारित था, वहीं लोहियावादी समाजवाद अधिक जनवादी, विकेन्द्रीकृत और सामाजिक न्याय पर आधारित था। इसी बीच कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी समाजवादी विचार को एक क्रांतिकारी रास्ते से आगे बढ़ाने का प्रयास किया, लेकिन वे मुख्यधारा की राजनीति में सीमित ही रहीं।[3]

इस प्रकार भारत में समाजवादी विचारधारा का विकास विभिन्न ऐतिहासिक, वैचारिक और सामाजिक स्रोतों से हुआ। यह विचारधारा औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष, सामाजिक असमानताओं की आलोचना, और आर्थिक न्याय की आकांक्षा से प्रेरित थी। नेहरू, लोहिया और जयप्रकाश जैसे नेताओं ने इसे भारतीय संदर्भ में ढालकर एक स्वदेशी समाजवाद का रूप देने का प्रयास किया। आज भी भारत के सामाजिक-राजनीतिक विमर्श में समाजवाद एक प्रासंगिक अवधारणा बनी हुई है, विशेषकर जब सामाजिक न्याय, गरीबों के अधिकार और समता की बात होती है।

नेहरू के समाजवादी चिंतन की प्रमुख विशेषता

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय समाजवाद के प्रमुख वास्तुविदों में से एक थे, जिनका समाजवादी चिंतन भारत की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र-निर्माण की दिशा में निर्णायक सिद्ध हुआ। उनका समाजवाद न तो पूरी तरह से यूरोपीय मॉडल पर आधारित था, न ही वह मार्क्सवादी कट्टरता से प्रेरित था, बल्कि यह एक व्यावहारिक, लोकतांत्रिक और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढला हुआ विचार था।[4] नेहरू के समाजवादी चिंतन की प्रमुख विशेषता यह थी कि उन्होंने समाजवाद को केवल आर्थिक न्याय का माध्यम न मानकर उसे एक व्यापक मानवीय और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के रूप में देखा। नेहरू का समाजवाद मूलतः लोकतांत्रिक समाजवाद था। उन्होंने यह विश्वास किया कि समाजवाद की स्थापना केवल लोकतांत्रिक प्रक्रिया और जनतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से ही संभव है। वह किसी भी प्रकार की क्रांति या हिंसात्मक उपायों के विरुद्ध थे। वे मानते थे कि एक बहुलतावादी समाज में परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसमें हर वर्ग और समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित की जाए। लोकतंत्र उनके लिए केवल शासन प्रणाली नहीं था, बल्कि सामाजिक न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समान अवसरों की गारंटी भी था। नेहरू के समाजवादी चिंतन की एक अन्य विशेषता थी योजनाबद्ध विकास की संकल्पना।

उनका विश्वास था कि एक पिछड़े और औपनिवेशिक शोषण से ग्रस्त राष्ट्र के लिए स्वतंत्र बाजार पर निर्भर रहना आत्मघाती सिद्ध होगा। अतः उन्होंने केंद्र सरकार के नेतृत्व में पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की, जिसके तहत सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ, बड़े बांध, भारी उद्योग, और वैज्ञानिक संस्थान स्थापित किए गए। उनका उद्देश्य था कि आर्थिक संसाधनों पर राज्य का नियंत्रण रहे जिससे पूंजी का संचय कुछ वर्गों तक सीमित न रहे और देश का सर्वांगीण विकास हो सके।[5] उन्होंने 'मिशन मोड' में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया क्योंकि उनका मानना था कि आधुनिक भारत का निर्माण तभी संभव है जब आर्थिक रूप से वह आत्मनिर्भर बने। नेहरू ने सामाजिक न्याय को अपने समाजवादी दृष्टिकोण का मूल बनाया। वे समझते थे कि भारतीय समाज जातिवाद, छुआछूत, धार्मिक विभाजन और लैंगिक भेदभाव से ग्रस्त है। अतः उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और समावेशी राष्ट्रवाद की नींव पर समाज के पुनर्गठन की कल्पना की। उनका यह विचार था कि जब तक समाज में समान नागरिकता की भावना नहीं होगी, तब तक आर्थिक समानता का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। उन्होंने अनुसूचित जातियों, पिछड़े वर्गों और महिलाओं के उत्थान के लिए नीतियाँ अपनाईं और संविधान के माध्यम से उनके अधिकारों की सुरक्षा की। नेहरू के समाजवाद की एक प्रमुख विशेषता यह भी थी कि उन्होंने भारतीय समाज के लिए वैज्ञानिक सोच को आवश्यक माना। उन्होंने अंधविश्वास, रूढ़ियों और परंपराओं के स्थान पर तर्क, विवेक और आधुनिक शिक्षा को महत्व दिया। उनके अनुसार, एक समाजवादी राष्ट्र तभी समृद्ध हो सकता है जब उसकी नागरिक चेतना वैज्ञानिक होगी और वह प्रगति के साथ कदमताल कर सकेगा। इसके लिए उन्होंने देश भर में विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों (जैसे आईआईटी), और अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना की। नेहरू का समाजवाद एक आदर्शवादी समाज की परिकल्पना करता था जिसमें गरीबी, बेरोजगारी, और असमानता का उन्मूलन हो, परन्तु उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि इस दिशा में बढ़ना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया होगी।[6] उनके विचारों में समाजवाद और राष्ट्रवाद का ऐसा समन्वय था, जिसमें सामाजिक कल्याण और राष्ट्रीय एकता दोनों साथ-साथ चलें।

इस प्रकार, नेहरू का समाजवादी चिंतन लोकतांत्रिक मूल्यों, योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक सोच और धर्मनिरपेक्षता पर आधारित था। वह एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे जो आधुनिक, समतामूलक और आत्मनिर्भर हो। यद्यपि उनके प्रयोगों की आलोचना भी हुई, परंतु यह निर्विवाद है कि उनके समाजवादी चिंतन ने भारत के सामाजिक और आर्थिक ढांचे को एक ठोस दिशा प्रदान की।

जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन की प्रमुख विशेषता

जयप्रकाश नारायण (जेपी) भारतीय समाजवादी आंदोलन के प्रमुख विचारक और कार्यकर्ता थे, जिनका समाजवाद नैतिकता, आत्मबल, और जनसक्रियता पर आधारित था। उन्होंने भारतीय समाज की यथार्थ स्थितियों को समझते हुए एक ऐसा समाजवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो पश्चिमी मार्क्सवाद की कट्टरता और सोवियत तानाशाही से भिन्न था। उनका समाजवाद गांधीवादी मूल्यों से प्रेरित था और

इसका उद्देश्य सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि समाज परिवर्तन था। उनका चिंतन भारतीय जनमानस, ग्राम्य जीवन, नैतिक राजनीति, और विकेन्द्रीकरण की अवधारणाओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। जेपी के समाजवादी विचारों की एक मौलिक विशेषता थी–**समाजवाद का नैतिक आधार**।[7] उन्होंने समाजवाद को केवल आर्थिक या राजनीतिक ढांचे तक सीमित नहीं माना, बल्कि उसे व्यक्ति की नैतिकता और समाज की आत्मा से जोड़ा। उनके अनुसार, समाजवाद का उद्देश्य केवल उत्पादन के साधनों का सामाजिक स्वामित्व नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना में बदलाव लाना भी है। वे मानते थे कि जब तक व्यक्ति के भीतर नैतिकता, आत्मसंयम और सेवा-भावना नहीं होगी, तब तक समाजवाद केवल एक नारा भर रह जाएगा। जेपी का समाजवादी चिंतन गांधीवादी दृष्टिकोण से अत्यधिक प्रभावित था। उन्होंने अहिंसा, सत्य, ग्राम स्वराज, और सर्वोदय जैसे सिद्धांतों को समाजवाद से जोड़ा। उनका मानना था कि भारतीय समाज की संरचना, विशेषकर गाँवों की आत्मनिर्भर व्यवस्था, को पुनर्जीवित कर ही एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने पश्चिमी औद्योगिक समाजवाद की आलोचना करते हुए कहा कि वह व्यक्ति को यंत्र बना देता है, जबकि गांधीवादी समाजवाद व्यक्ति को केंद्र में रखता है। उनके समाजवादी दृष्टिकोण की दूसरी प्रमुख विशेषता थी–**विकेन्द्रीकरण**।[8] जेपी ने सत्ता के केंद्रीकरण का विरोध किया और ग्राम पंचायतों के माध्यम से स्थानीय स्वराज की बात की। वे मानते थे कि सत्ता का केंद्रीकरण व्यक्ति को निर्बल और असहाय बनाता है, जबकि विकेन्द्रीकरण व्यक्ति को सशक्त बनाता है और समाज में सहभागिता की भावना को प्रोत्साहित करता है। उनके अनुसार, समाजवाद तभी सफल होगा जब आर्थिक और राजनीतिक निर्णय स्थानीय स्तर पर लिए जाएँगे और समुदाय स्वयं अपनी जिम्मेदारी निभाएगा। जेपी का समाजवाद केवल आर्थिक योजना या राजनीतिक विचार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह **सम्पूर्ण क्रांति** की संकल्पना के रूप में प्रकट हुआ। उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति को सात क्षेत्रों में विभाजित किया– राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, नैतिक और आध्यात्मिक। उनका मानना था कि केवल एक क्षेत्र में परिवर्तन लाकर समाज को नहीं बदला जा सकता, बल्कि सभी क्षेत्रों में समवेत क्रांति आवश्यक है।[9] यह क्रांति व्यक्ति की चेतना से प्रारंभ होकर संपूर्ण व्यवस्था के कायाकल्प तक जाती है। जेपी ने युवाओं को समाज परिवर्तन का वाहक माना। 1970 के दशक में जब उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया, तो यह आंदोलन केवल एक राजनीतिक सत्ता के विरोध में नहीं था, बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ था जो शोषण, अन्याय और भ्रष्टाचार पर आधारित थी। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे राजनीतिक सत्ता में भागीदारी के बजाय समाज निर्माण में जुटें, और 'राजनीतिक नैतिकता' का नवसृजन करें। साथ ही जेपी का समाजवाद **जनांदोलन आधारित** था। वे मानते थे कि समाज का परिवर्तन केवल सरकार या किसी नेता के प्रयास से नहीं हो सकता, बल्कि जनता को स्वयं संगठित होकर परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ना होगा। इसी कारण उन्होंने सत्ता से स्वयं को दूर रखा और जनता के साथ सीधे संवाद बनाए रखा। उन्होंने वैकल्पिक राजनीति की अवधारणा दी जो सत्ता की राजनीति से हटकर सेवा, नैतिकता और जनभागीदारी पर आधारित थी।

इस प्रकार, जयप्रकाश नारायण का समाजवादी चिंतन एक गहरे नैतिक और मानवीय धरातल पर आधारित था। वह केवल सत्ता हस्तांतरण नहीं, बल्कि समाज के पुनर्निर्माण की बात करते थे। उनका समाजवाद विकेन्द्रीकरण, आत्मनिर्भरता, जनसक्रियता और नैतिक राजनीति का संगम था। आज जब राजनीति में मूल्यों का क्षरण हो रहा है, तब जेपी का समाजवादी चिंतन और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

जवाहरलाल नेहरू एवं जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन का तुलनात्मक विश्लेषण

भारतीय समाजवादी चिंतन के विकास में जवाहरलाल नेहरू और जयप्रकाश नारायण (जेपी) दोनों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि दोनों विचारक समाजवाद की ओर आकृष्ट थे और समानतामूलक समाज की कल्पना करते थे, फिर भी उनके चिंतन की दिशा, स्वरूप और कार्यप्रणाली में मूलभूत अंतर दिखाई देता है। जहाँ नेहरू का समाजवाद राज्य नियंत्रित योजनाओं और औद्योगिकीकरण पर आधारित था, वहीं जयप्रकाश नारायण का समाजवाद विकेन्द्रीकरण, नैतिकता और ग्राम स्वराज जैसे तत्वों से प्रेरित था। इस तुलना को समझने के लिए उनके वैचारिक आधार, समाज परिवर्तन की पद्धति, राज्य की भूमिका, और अंततः समाजवाद की परिकल्पना के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना उपयोगी होगा।

वैचारिक प्रेरणा और आधारभूत दृष्टिकोण

नेहरू का समाजवादी चिंतन मुख्यतः पश्चिमी विचारकों जैसे मार्क्स, लेनिन, और फैबियन समाजवाद से प्रभावित था। उनका समाजवाद वैज्ञानिक सोच, औद्योगिक विकास और योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था पर आधारित था। इसके विपरीत, जयप्रकाश नारायण का समाजवाद गांधीवादी सिद्धांतों–अहिंसा, सत्य, आत्मनिर्भरता, और नैतिकता–से गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने मार्क्सवाद से आरंभ किया लेकिन बाद में उसमें व्याप्त हिंसा और अधिनायकवाद के कारण उससे हटकर गांधीवादी समाजवाद को अपनाया।[10]

राज्य की भूमिका और विकास की रणनीति

नेहरू का मानना था कि भारत जैसे पिछड़े देश में तेज आर्थिक विकास के लिए राज्य की निर्णायक भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र को विकास का मुख्य इंजन बनाया और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भारी उद्योगों, विज्ञान, और तकनीकी संस्थानों की स्थापना कर राष्ट्रनिर्माण का मार्ग चुना। इसके उलट, जेपी सत्ता के केंद्रीकरण के विरोधी थे। वे सत्ता के विकेन्द्रीकरण, ग्राम स्वराज और स्थानीय स्वायत्तता के पक्षधर थे। उनका विचार था कि वास्तविक समाजवाद तभी स्थापित हो सकता है जब सत्ता और संसाधनों पर नियंत्रण समुदाय और व्यक्ति के हाथों में हो।

लोकतंत्र, नैतिकता और जनसहभागिता

जहाँ नेहरू का समाजवाद लोकतांत्रिक प्रणाली में विश्वास करता था और संसदीय व्यवस्था को समाजवाद के अनुकूल मानता था, वहीं जयप्रकाश नारायण ने लोकतंत्र को केवल राजनीतिक नहीं,

बल्कि सामाजिक और नैतिक स्तर पर भी विस्तारित किया। जेपी ने 'राजनीतिक नैतिकता' पर ज़ोर दिया और कहा कि जब तक राजनीति से भ्रष्टाचार, जातिवाद, और अवसरवाद नहीं हटेगा, तब तक समाजवादी व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की कल्पना की।[11]

समाज परिवर्तन की दिशा और प्रक्रिया

नेहरू का दृष्टिकोण संरचनात्मक परिवर्तन पर केंद्रित था। उन्होंने संविधान, विधि और संस्थागत सुधारों के माध्यम से समाज में समानता लाने का प्रयास किया। वहीं जेपी का जोर समाज की चेतना और व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव लाने पर था। वे क्रांति को केवल आर्थिक या राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति की संकल्पना दी जिसमें शिक्षा, संस्कृति, नैतिकता, और आत्मिक विकास भी शामिल थे।

व्यावहारिकता बनाम आदर्शवाद

नेहरू के समाजवाद में व्यावहारिकता और राज्य-नीतिगत क्रियान्वयन का स्पष्ट पक्ष था। उन्होंने जो योजनाएं और संस्थान खड़े किए, वे समाजवाद के व्यावहारिक संस्करण के रूप में देखे जाते हैं। दूसरी ओर, जेपी के समाजवाद में आदर्शवाद की प्रमुखता थी। उन्होंने सत्ता को अस्वीकार कर समाज के साथ सीधा संवाद कायम किया और परिवर्तन की प्रक्रिया को निचले स्तर से आरंभ करने पर बल दिया।

निष्कर्षतः

इस प्रकार जहाँ नेहरू का समाजवाद शीर्ष से नीचे (Top-down approach) की दिशा में कार्य करता था, वहीं जेपी का समाजवाद नीचे से ऊपर (Bottom-up approach) की प्रक्रिया का पक्षधर था। नेहरू ने संस्थागत ढांचे और योजनाओं के माध्यम से समाजवाद लागू करने की कोशिश की, जबकि जेपी ने व्यक्ति, समुदाय और समाज की चेतना को बदलकर समाजवाद की स्थापना की कल्पना की। दोनों के समाजवादी दृष्टिकोण में अंतर होने के बावजूद, दोनों का अंतिम उद्देश्य एक समतामूलक, शोषणमुक्त और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना था। दरअसल नेहरू और जयप्रकाश दोनों ने भारतीय समाजवाद को अपने-अपने ढंग से परिभाषित और विकसित किया। नेहरू ने जिस आधुनिक, औद्योगिक और संस्थागत समाजवाद की नींव रखी, वही जेपी के लिए नैतिक, विकेन्द्रीकृत और जनकेंद्रित समाजवाद की जमीन बना। इन दोनों दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय समाजवादी विमर्श को एक समग्र समझ प्रदान करता है।

संदर्भ (References)

1. नेहरू, जवाहरलाल. *डिस्कवरी ऑफ इंडिया*. नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, 2004, पृ. 387
2. नारायण, जयप्रकाश. *लोकनीति और समाजवाद*. नवभारत प्रकाशन, 1977, पृ. 45
3. कुलदीप नैयर. *जेपी: एन अनकम्प्रोमाइजिंग जीवन*. पेंगुइन बुक्स, 2001, पृ. 112
4. पाणिग्रही, वी.पी. *नेहरूवियन प्लानिंग एंड सोशलिज्म इन इंडिया*. स्टर्लिंग पब्लिशर्स, 1985, पृ. 61
5. मिश्रा, रमेश. *साम्यवाद से समाजवाद तक*. ग्रंथ निकेतन, 1993, पृ. 201
6. मेहता, वी.आर. *भारतीय राजनीतिक चिंतन: आधुनिक और समकालीन*. न्यू एज इंटरनेशनल, 2001, पृ. 153
7. आहुजा, एम.एल. *जे.पी. नारायण: ए पोलिटिकल बायोग्राफी*. प्रकाशन संदर्भ, 2010, पृ. 92-.
8. गोस्वामी, अरुण कुमार. *नेहरू और भारतीय समाजवाद*. ओरिएंट पब्लिशर्स, 1999, पृ. 66
9. चतुर्वेदी, योगेश. *समाजवादी आंदोलन का इतिहास*. सस्ता साहित्य मंडल, 2005, पृ. 178
10. शुक्ल, बृजेश. *भारत में वैकल्पिक राजनीति: जेपी आंदोलन का मूल्यांकन*. जनपथ प्रकाशन, 2014, पृ. 135
11. वही